क्या
इस्लाम से बेहतर
कोई दावत हो सकती है!

मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी

अनुवाद

मुहम्मद आबिद हामिदी

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

"अल्लाह के नाम से जो बड़ा ही मेहरबान और रहम करनेवाला है।"

भूमिका

मस्जिद इशाअते-इस्लाम, दावत नगर, अबुल-फ़ज़्ल इन्क्लेव, नई दिल्ली को दक्षिणी दिल्ली में केन्द्रीय महत्व प्राप्त है। दस साल पहले जनाब मौलाना सैयद जलालुद्दीन उमरी के मर्कज़ जमाअते-इस्लामी हिन्द में शुभागमन के बाद उनके जुमा और दोनों ईदों के लगातार ख़ुतबों की वजह से इसकी यह हैसियत दो गुनी हो गई है। दूर-दूर से बड़ी तादाद में मर्द और औरतें यहाँ जुमा और ईदों की नमाज़ अदा करने के लिए आते हैं और मौलाना के भाषणों से लाभ प्राप्त करते हैं। दोनों ईदों के अवसर पर लगभग पन्द्रह हज़ार लोग नामज़ में शरीक होते हैं? इस सिलसिले में यह बात भी ध्यान देने के क़ाबिल है कि मौलाना के ये भाषण परम्परागत या मात्र उपदेश नहीं होते बल्कि वे पहले से सोचे-समझे और सुनिश्चित विषय की मुनासिबत से होते हैं और मौलाना उसी विषय की परिधि में रहते हुए बीस-पच्चीस मिनट के संक्षिप्त समय में अपनी बात पूरी करते हैं।

14, अक्तूबर सन् 2007 ई० को भी मौलाना ने ईदुल-फ़ित्र के अवसर पर नमाज़ के बाद लगभग पन्द्रह

हज़ार लोगों को सम्बोधित किया। जमाअते-इस्लामी हिन्द का अध्यक्ष-पद सँभालने के बाद आपका यह इस सिलसले का पहला भाषण (ख़ुतबा) था। इसमें मौलाना ने बड़े सोज़ व दर्दमन्दी के साथ हाज़िर लोगों को नेकी और तक़्वा (परहेज़गारी), की नसीहत की और उन्हें उन ज़िम्मेदारियों का एहसास दिलाया जो मुस्लिम उम्मत (समुदाय) होने की वजह से अल्लाह की तरफ़ से उनपर लागू होती हैं। यह ख़ुतबा इतना सादा, सरल और असरदार था कि बड़ी तादाद में लोगों ने इसकी ऑडियो कैसेट और सी॰डीज़ की ख़्वाहिश ज़ाहिर की। अख़बारों ने इसके महत्वपूर्ण अंशों को प्रकाशित किया और कई समाचार पत्रों ने इस पूरे ख़ुतबे को अपने अख़बारों में ज्यों-का-त्यों प्रकाशित किया। इस सूरते-हाल के पेशेनज़र ख़याल किया गया कि इसे किताबी शक्ल में प्रकाशित किया जाए ताकि ज़्यादा-से-ज़्यादा लोग इससे फ़ायदा हासिल कर सकें। हमें ख़ुशी है कि मौलाना ने इसपर एक नज़र डालकर इसे और अधिक लाभप्रद और बेहतर बना दिया है।

इस ख़ुतबे के लाभप्रद होने को ध्यान में रखते हुए इसे प्रकाशित किया जा रहा है।

—प्रकाशक

क्या इस्लाम से बेहतर कोई दावत हो सकती है!

अल्लाह की तारीफ़ के बाद :

> “और उस आदमी की बात से अच्छी बात और किसकी होगी जिसने अल्लाह की तरफ़ बुलाया और नेक अमल किया और कहा कि मैं मुस्लिम (फ़रमाँबरदार) हूँ। और (ऐ नबी!) नेकी और बदी बराबर नहीं हैं। तुम बदी को उस नेकी से दूर करो जो बेहतर हो। तुम देखोगे कि तुम्हारे साथ जिसकी अदावत (दुश्मनी) पड़ी हुई थी, वह जिगरी दोस्त बन गया है। यह ख़ूबी नसीब नहीं होती मगर उन लोगों को जो सब्र करते हैं, और यह मक़ाम हासिल नहीं होता मगर उन लोगों को जो बड़े नसीबवाले हैं” (क़ुरआन, 41:33-35)

इस्लामी भाइयो और नौजवानो! सम्माननीय औरतो, माँओं, बहनो और बेटियो! आज ईद का दिन है, हम सबको इस बात की खुशी है कि रमज़ान का महीना आया। हमने इसमें रोज़े रखे, तरावीह की नमाज़ अदा की, क़ुरआन मजीद का मामूल से ज़्यादा मुताला (अध्ययन) किया, इसकी तिलावत की और सदक़ा, ख़ैरात भी अपनी हैसियत के मुताबिक़ किया। अल्लाह इन कोशिशों को क़बूल फ़रमाए। लेकिन यह बात हमें नहीं भूलनी चाहिए कि ये सब सिर्फ़ अल्लाह ही का फ़ज़्ल है। यह हमारे बस में नहीं है कि हम

इतनी मुश्किल इबादतों से कर्तव्य-मुक्त हों। यह उसका करम, उसकी देन और उसकी इनायत है कि एक मुश्किल इबादत हमने अन्जाम दी और अपनी व्यस्तताएँ भी जारी रखीं। अल्लाह के इस करम और एहसान का शुक्रिया अदा करने के लिए यह दोगाना नमाज़ ईदुल-फ़ित्र रखी गई है।

आप जानते हैं, जुमा में पहले ख़ुतबा होता है बाद में नमाज़ होती है, लेकिन यहाँ (इदैन की नमाज़ में यह) हुक्म दिया गया है कि सबसे पहले ख़ुदा के सामने सिर झुकाओ कि उसने तुम्हें इस्लाम की दौलत दी और इतनी इबादतों की तौफ़ीक़ दी। पहले सिर झुकाओ और उसका शुक्रिया अदा करो। रोज़े के जहाँ हुक्म (आदेश) दिए गए हैं, वहाँ यह भी कहा गया है—

> "और जो सीधा रास्ता अल्लाह ने तुम्हें दिखाया है, उसपर अल्लाह की बड़ाई का इज़हार करो और मानो और शुक्रगुज़ार बनो।" (क़ुरआन, 2:185)

अल्लाह की बुज़ुर्गी और बड़ाई के इज़हार की एक सूरत तकबीर (अल्लाह की बड़ाई का ज़िक्र) भी है। कुछ आलिमों ने लिखा है कि इसके लिए तकबीरें रखी गई हैं। इसलिए ईदगाह के लिए निकलने से लेकर नमाज़ शुरू होने तक तकबीर जारी रखने का हुक्म है और इसी मक़सद से ईद की नमाज़ में ज़्यादा तकबीरें रखी गई हैं। तकबीर के ज़रीए अल्लाह की महानता और बड़ाई का इज़हार होता है। नमाज़ के ज़रीए आदमी उसका शुक्र अदा करता है कि उसने उसे रमज़ान की इबादतों की तौफ़ीक़ दी। अगर किसी से रमज़ान में कोई कोताही हो तो माफ़ी माँगे कि हमसे कोताही हो गई है, आगे नहीं होगी। और यह इरादा करे कि जो कुछ हो चुका,

आइन्दा नहीं होगा। अब गफ़लत नहीं होगी। उम्मीद है कि अल्लाह उसे माफ़ कर देगा।

मेरे भाइयो और साथियो! अल्लाह का सबसे बड़ा एहसान हमपर यह है कि उसने हमें क़ुरआन मजीद जैसी हिदायत की किताब दी और हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)*, जिनपर हज़ार बार हमारी जानें क़ुरबान हों, जैसे मार्गदर्शक और रहनुमा दिए। वरना आप *(सल्ल०)* के आने से पहले जिस तरह दुनिया जिहालत और अज्ञानता में डूबी थी, हम भी शायद उसी तरह जिहालत और अज्ञानता का जीवन बिताते रहते। यह अल्लाह का बड़ा एहसान है कि मुहम्मद *(सल्ल०)* के ज़रीए उसने हमें इससे नजात दी और आप *(सल्ल०)* को सारी दुनिया के लिए रहमत बनाकर भेजा। आप *(सल्ल०)* के आने से पहले दुनिया शिर्क और कुफ़्र में ग्रस्त थी, अल्लाह को भूली हुई थी, आख़िरत (परलोक) की कोई कल्पना नहीं रखती थी। गरोहों और सम्प्रदायों में बटी हुई थी। ये गरोह और सम्प्रदाय (फ़िरक़े) आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। ख़ून-ख़राबा हो रहा था। बद-अख़लाक़ी थी, इज़्ज़त-आबरू तार-तार हो रही थी। वेश्याओं और तवाइफ़ों के कोठे मौजूद थे और लोग वहाँ अपनी कामुक भावनाओं की तृप्ति के लिए जाते थे, और इसे ऐब नहीं समझा जाता था। बाँदियों से वेश्याओं का काम लिया जाता था। एक गन्दी तहज़ीब थी। अल्लाह ने अपने रसूल हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* पर क़ुरआन अवतरित किया और हुक्म दिया कि इसके ख़िलाफ़ बग़ावत का झण्डा बुलन्द कीजिए। लोगों को बताइए कि जीवन का यह ढंग ग़लत है। ज़िन्दगी इसका नाम नहीं है कि आदमी जानवरों की तरह

अपने दिन-रात गुज़ारे। इनसान इनसान है, इसके लिए अल्लाह ने जीवन बिताने का एक ढंग बताया है। क़ुरआन ने सही राह दिखानी शुरू की। अल्लाह के नबी *(सल्ल०)* उसकी व्याख्या करने लगे, लोगों ने अल्लाह की हिदायत और उसके रसूल *(सल्ल०)* की रहनुमाई क़बूल करने से इनकार कर दिया और उसका विरोध शुरू कर दिया कि तौहीद (एकेश्वरवाद) का जो अक़ीदा पेश किया जा रहा है, हम उसे स्वीकार नहीं करेंगे। शिर्क ही सही है, कुफ़्र ही सही है, वही रास्ता सही है जिसपर हम चल रहे हैं। हमारी तहज़ीब ही हमें पसन्द है, हमारी सभ्यता ही अच्छी है, हमें अपना यही कल्चर चाहिए। अगर हम लड़ते हैं तो अपनी बरतरी के लिए लड़ते हैं, और लड़ते ही रहेंगे। इस ज़लालत और गुमराही से निकालने की जो बेग़र्ज़ कोशिश आप (सल्ल॰) कर रहे थे उसके बारे में वे (अधर्मी) कहते हैं, "ज़ाहिरी तौर पर तो अल्लाह और रसूल का नाम लिया जा रहा है। लेकिन इसके पीछे तो कुछ और ही उद्देश्य हैं। ये ग़लबा हासिल करना चाहते हैं, हमारी हुकूमत को ख़त्म करना चाहते हैं और हमारी तहज़ीब को मिटाना चाहते हैं।" फ़िरऔन ने भी यही कहा था कि हज़रत मूसा *(अलैहि०)* तुम्हारे दीन को बदल देना चहते हैं। आपके विरोधी आपके ख़िलाफ़ एक हो गए और अपने ग़लत समाज को पुकारा कि आओ अपने अक़ीदे अपनी तहज़ीब और अपने कल्चर पर जम जाओ, इससे न हटो। जब उन्होंने देखा कि इसके बावजूद आप *(सल्ल०)* की दावत फैल रही है और सही ढंग से सोचने-समझने वाले उसे क़बूल कर रहे हैं तो उन्होंने कहा कि क़ुरआन की इस आवाज़ को ऊँचा न उठने दो, यह आवाज़ हमारे लिए बड़ा ख़तरा है—

"इन सत्य के इनकारियों ने कहा 'इस क़ुरआन को हरगिज़ न सुनो, और क़ुरआन अगर कहीं सुनाया जा रहा हो (पढ़ा जा रहा हो या इसकी दावत दी जा रही हो) तो शोर और हंगामा करो ताकि (इसकी आवाज़ दब जाए और) तुम्हारी आवाज़ ऊँची रहे।" (क़ुरआन, 41:26)

ज़ाहिर है कि आदमी जब दलीलों (प्रमाणों) के मैदान में हार जाता है तो यही सब चालें और हरबे इस्तेमाल करता है। उन्होंने भी यही किया और कहा कि क़ुरआन की आवाज़ को बुलन्द न होने दिया जाए, इसे दबा और कुचल दिया जाए और अगर क़ुरआन पेश किया जाए तो कहा जाए कि हम इसे सुनने के लिए तैयार नहीं हैं। ऐसा शोर और हंगामा बरपा हो कि यह आवाज़ दब जाए। अगर कुछ लोग क़ुरआन की ओर ध्यान लगा रहे हैं तो तवाइफ़ों को बुलाओ और क़िस्से-कहानियाँ सुनानेवालों को जमा करो कि वे आएँ और क़ुरआन का मुक़ाबला करें। इसके लिए उन्होंने कल्चर के नाम पर गन्दे प्रोग्राम शुरू किए। क़ुरआन मजीद ने हैरत से कहा, "अल्लाह के ऐसे बन्दे भी दुनिया में मौजूद हैं जो बेकार और बेहूदा चीज़ों को ख़रीदते हैं और क़ुरआन का मुक़ाबला करना चाहते हैं।" यह सब कुछ होता रहा। अल्लाह ने अपने पैग़म्बर *(सल्ल०)* को हुक्म दिया कि आप सब्र (धैर्य) के साथ अपना काम किए जाइए, एक दिन आप ही ग़ालिब (विजयी) होंगे।

"अल्लाह का फ़ैसला हो चुका है कि मैं ग़ालिब रहूँगा और मेरे रसूल ग़ालिब रहेंगे।"

मेरे भाइयो और साथियो! आपका इतिहास बहुत शानदार है कि बहुत ही थोड़ी मुद्दत में और कुछ ही वर्षों में

अरब की दुनिया बदल गई। वह वैसी नहीं रही जैसी थी, बल्कि वैसी हो गई जैसी क़ुरआन ने चाहा, अल्लाह के रसूल *(सल्ल०)* ने चाहा और आप *(सल्ल०)* के साथियों *(रज़ि०)* ने चाहा। अब यह दुनिया उनके हाथ में थी, उनके दुश्मनों के हाथ में नहीं थी। उन्होंने जो अक़ीदा (धारणा) दिया वह उसका अक़ीदा बन गया, उन्होंने जो अख़लाक़ दिए वे उसके अख़लाक़ बन गए और उन्होंने जो तहज़ीब (सभ्यता) दी वह उसकी तहज़ीब बन गई।

इस कामयाब तजुर्बे के बाद आप *(सल्ल०)* को और आपके साथियों को हुक्म हुआ कि वे दुनिया का मार्गदर्शन करें। यहाँ ग़लत अक़ीदों (आस्थाओं) की जगह सही और पाकीज़ा अक़ीदा होना चाहिए, ग़लत फ़िक्र की जगह सही फ़िक्र होनी चाहिए, असभ्यता की जगह सुसभ्यता होनी चाहिए और दुष्चरित्रता की जगह सुचरित्रता होनी चाहिए। यह दुनिया इसलिए नहीं है कि ग़लत और गुमराह लोग हुक्मरानी करें, बल्कि इसका निर्माण (तामीर) नेक और सुसभ्य लोगों के हाथों से होना चाहिए।

मेरे दीनी भाइयो! हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* ने जो उम्मत बरपा की थी वह पूरी दुनिया में फैल गई, तहज़ीब के केन्द्रों को अपने अधीन कर लिया और अपनी तहज़ीब और अपनी फ़िक्र नाफ़िज़ (लागू) कर दी। हम उसके नायब बने। हमने उसका हक़ अदा नहीं किया, लेकिन हमारी हज़ार ग़लतियों और कमियों के बावजूद हमारा इक्तिदार (शासन) सदियों तक बाक़ी रहा और हमारा हुक्म चलता रहा।

भाइयो और साथियो! आज दुनिया उसी हालत में पहुँच गई है, जिस हालत में क़ुरआन नाज़िल होने के वक़्त थी।

इल्म के दावों के बावजूद जाहिलियत का दौर-दौरा है। आप देख रहे हैं कि दुनिया बिल्कुल दो भागों में बँट गई है। एक ओर ताक़तवर क़ौमें हैं, दूसरी ओर कमज़ोर क़ौमें। ताक़तवर क़ौमें कमज़ोर कौमों पर जबरन अपनी फ़िक्र और तहज़ीब मुसल्लत करना चाहती हैं, अपनी आर्थिक व्यवस्था लागू करना चाहती हैं, अपना तौर-तरीक़ा मुसल्लत करना चाहती हैं, और कमज़ोर क़ौमों के पास जो कुछ संसाधन हैं उनपर क़ब्ज़ा करना चाहती हैं। उनकी आज़ादी हर दिन छिन रही है और ताक़तवर क़ौमें उसे ख़त्म करना चाहती हैं। यह ज़ुल्म-ज़्यादती की आख़िरी हद है। सवाल यह है कि क्या यह ज़ुल्म बाक़ी रहेगा या उसे बाक़ी रहना चाहिए? हम सब यही कहेंगे कि इसे हरगिज़ बाक़ी नहीं रहना चाहिए, और अल्लाह ने चाहा तो यह बाक़ी नहीं रहेगा।

आज जब कहा जाता है कि इस्लाम इस ज़ुल्म को मिटाना चाहता है, वह न्याय और इन्साफ़ प्रदान करता है, वह हर एक के अधिकारों की रक्षा करता है, वह मौजूदा गन्दी सभ्यता के मुक़ाबले में साफ़-सुथरी सभ्यता चाहता है और समस्याओं के बारे में न्यायिक दृष्टिकोण पेश करता है। तुम बेख़ुदा तहज़ीब चाहते हो, इस्लाम ईश्वरीय तहज़ीब चाहता है। तुम ख़ुदा की हिदायत से बेपरवाह चल रहे हो, इस्लाम चाहता है कि इनसान ख़ुदा की हिदायत का पाबन्द रहे। जब इस्लाम की यह तालीम (शिक्षा) पेश की जाती है तो कहा जाता है कि ये घिसे-पिटे पुराने ख़यालात (विचार) हैं, ये चलनेवाले नहीं हैं। बाक़ी रहेगी तो हमारी जीवन-व्यवस्था बाक़ी रहेगी, हमारी तहज़ीब बाक़ी रहेगी, हमारा कल्चर (संस्कृति) बाक़ी रहेगा। देखो हमने ख़ुदा का

इनकार करके तरक्क़ी की है या नहीं? वह इस्लाम जिसका हवाला दिया जा रहा है वह क्या है? वह तो आतंकवाद की शिक्षा देता है, अधिकारों को मार लेता है, फ़साद बरपा करता और क़ौमों को लड़ाता है, मज़हब (धर्म) ने हमेशा दुनिया में तबाही मचाई है और आज यह फिर तबाही मचाना चाहता है। इलाम का हवाला न दो, वह तो हमें अंधकार (Dark age) में ले जाना चाहता है। हम उसका नाम तक सुनने के लिए तैयार नहीं हैं।

अगर आप कहें कि इस्लाम एक जीवन-व्यवस्था है, वह तुम्हारे या हमारे ही लिए नहीं, सारी दुनिया के लिए है। देखो, इसपर ग़ौर करो, तो जवाब दिया जाता है कि इसपर हम ग़ौर नहीं करेंगे। क़ुरआन मजीद ने अरब के जाहिलों से कहा, "उससे बेहतर बात किस आदमी की होगी जो अल्लाह की तरफ़ बुला रहा है।" तुम क़ौमों की तरफ़ बुलाते हो, क़बीलों (ख़ानदानों) की तरफ़ बुलाते हो, लोगों की तरफ़ बुलाते हो, मुल्कों (राष्ट्रों) की तरफ़ बुलाते हो, क्या इसके मुक़ाबले में यह बात ज़्यादा बेहतर नहीं, ज़्यादा बरतर और बुलन्द नहीं कि दुनिया को अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाए। क़ुरआन मजीद ने कहा, "बताओ, उससे अच्छी बात किसकी हो सकती है जो केवल एक अल्लाह की तरफ़ बुला रहा है और उसके मुताबिक़ अमल कर रहा है।" यह नहीं कि केवल उपदेश है, नसीहत है बल्कि वह उसके अनुसार काम भी कर रहा है और दोस्तों और दुश्मनों के साथ अच्छा बरताव कर रहा है। उसका तुम्हें स्वागत करना चाहिए। यह हर आवाज़ के मुक़ाबले में बेहतर आवाज़ है, सबसे सही और सबसे पाकीज़ा आवाज़ है और इसी को बुलन्द होना चाहिए। दुनिया

ख़ानदानों, क़बीलों और क़ौमों की बरतरी का दावा करती है और उनका इक़तिदार (सत्ता) चाहती है तथा अपने स्वार्थी नेताओं के पीछे दौड़ रही है। लेकिन अल्लाह की इताअत (फ़रमाँबरदारी) और बन्दगी क़बूल करने के लिए तैयार नहीं है।

मेरे भाइयो और साथियो! वक़्त आ गया है कि इस पैग़ाम को लेकर उठें। यहाँ दावत किसी बादशाह या किसी राष्ट्रीय शासक, किसी क़बीले और किसी क़ौम की तरफ़ नहीं, बल्कि अल्लाह की तरफ़ है। दुनिया का हर व्यक्ति अल्लाह का बन्दा है और उसी का उसे फ़रमाँबरदार होना चाहिए।

मेरे भाइयो और दोस्तो! अल्लाह के नबी *(सल्ल०)* और आप (सल्ल॰) के साथियों (रजि०) ने पूरी ताक़त के साथ यह आवाज़ बुलन्द की थी, "बताओ उसकी बात से अच्छी किसकी बात हो सकती है जो अल्लाह की ओर बुला रहा है।" और अख़िरकार दुनिया उसे मानने पर मजबूर हो गई। लेकिन अफ़सोस है कि आज हम हज़ारों, लाखों और करोड़ों की संख्या में मौजूद हैं मगर यह आवाज़ कहीं से बुलन्द नहीं हो रही है। मालूम तो ऐसा होता है कि जैसे इसका हौसला हममें नहीं रहा कि हम दुनिया से कह सकें कि अल्लाह की फ़रमाँबरदारी और बन्दगी से बेहतर कोई जीवन-व्यवस्था नहीं हो सकती। हममें यह कहने का साहस नहीं रहा कि देखो, न मैं अपनी ज़ात की तरफ़ बुला रहा हूँ, न अपनी क़ौम की तरफ़, न अपने क़बीले और ख़ानदान की तरफ़ बुला रहा हूँ और न अपने देश की तरफ़, बल्कि पूरी मानव जाति को आवाज़ दे रहा हूँ कि आओ, अल्लाह के बन्दे बन जाओ और उसके हुक्मों को मानने लगो।

भाइयो और साथियो! आप जानते हैं इस दुनिया में मुसलमान एक अन्दाज़े के मुताबिक '150' करोड़ हैं और तीन दर्जन से अधिक देशों में मुसलमानों की हुकूमतें हैं, लेकिन किसी में यह हिम्मत और हौसला नहीं है कि कहे कि हम दुनिया को अल्लाह की तरफ़ बुला रहे हैं। बताओ, इससे बेहतर कोई फ़लसफ़ा (दर्शन) और दृष्टिकोण तुम्हारे पास है? तुम्हारा हर फ़लसफ़ा और नज़रिया इनसानों को गरोहों में बाँटनेवाला, आपस में लड़ाने और जुल्म-ज़्यादती करनेवाला है। इसे ख़त्म होना चाहिए। हैरत होती है कि इतनी बड़ी उम्मत अपने दीन पर यक़ीन से इतनी महरूम (वंचित) और विरोधी ताक़तों से इतनी भयभीत है कि कहीं से इस्लाम के हक़ में आवाज़ बुलन्द नहीं हो रही है। आज इस देश में आप बीस करोड़ से अधिक हैं और देश के हर क्षेत्र में फैले हुए हैं। अगर देश के कोने-कोने से यह आवाज़ उठे "उससे अच्छी बात किसकी हो सकती है जो अल्लाह की ओर बुलाए" तो है कोई फ़लसफ़ा, है कोई हिकमत, है कोई नज़रिया जो इस जीवन-व्यवस्था से बेहतर हो जो हम पेश कर रहे हैं! मेरा ख़याल है कि इस देश का नक्शा बदल जाएगा। बीस करोड़ इनसान अगर यह आवाज़ बुलन्द करें और हर कोने से बुलन्द करें कि आओ अल्लाह के बन्दे बनो, इसी में हमारी और तुम्हारी भलाई है तो फिर मुमकिन नहीं है कि यह देश किसी और तरफ़ जा सके और कोई और रास्ता उसे दिखाया जा सके। सिर्फ़ यही एक रास्ता होगा, और अगर नहीं होगा तो आपकी आवाज़ फ़ज़ा में गूँजती रहेगी, और अगर आपकी जान इसमें चली जाए तो यह

ख़ुशक़िस्मती है आपके लिए भी और मेरे लिए भी। क़ुरआन ने अल्लाह के बन्दों के बारे में कहा–

> "उन्होंने अल्लाह से जो वादा किया था उसे पूरा कर दिखाया और कभी वे पीछे नहीं हटे।"
>
> (क़ुरआन, 33:23)

हमने भी अल्लाह से वादा किया है। उसे भी पूरा होना चाहिए।

भाइयो और साथियो, अगर बीस करोड़ से ज़्यादा की यह आबादी अल्लाह के उस पैग़ाम को लेकर उठे तो कुछ मुश्किल नहीं कि यह दुनिया आपकी हो जाए और आप उसके मार्गदर्शक और रहनुमा हों, आप पीछे चलनेवाले नहीं, रहनुमाई करनेवाले बन जाएँ। उस वक़्त आप दूसरों की आँखों के इशारों को नहीं देखेंगे, बल्कि दुनिया आपकी तरफ़ देखेगी और आपके इशारों पर चलेगी।

मेरे भाइयो और साथियो! हममें से कितने हैं जिनको यह मालूम है कि उनको क्या पैग़ाम दिया गया था। उनसे कहा गया था कि वे दुनिया की रहनुमाई करें और उसे बताएँ कि सीधा रास्ता यह है कि हम अल्लाह के बन्दे बनकर रहें, उसके अलावा हर रास्ता ग़लत है। क्या इतनी बड़ी आबादी इसके लिए तैयार है? अगर तैयार है तो समझ लीजिए कि अल्लाह का वादा भी पूरा होकर रहेगा और अल्लाह की मदद हमेशा आपके साथ होगी। बेशक यह रास्ता कठिन है। कोई नहीं कह सकता कि अगर आपने यह आवाज़ बुलन्द की तो आसानियाँ मिलने लगेंगी, क़दम-क़दम पर रुकावटें होंगी। ज़रूरत ऐसे साहसी इनसानों की और ऐसे मैदाने-कार की है जो यह आवाज़ बुलन्द कर सकें कि यही एक सच्चा दीन

है। इसी में तुम्हारीं भी नजात है और हमारी भी। इसके लिए ज़रूरी है कि पहले हम ख़ुद इस्लाम को समझें, अपने अमल से उसका सुबूत पेश करें। हम बदल जाएँ, हमारे मामलात उसकी रौशनी में हल होने लगें, हमारी पूरी ज़िन्दगी पर उसकी हुक्मरानी होने लगे और हम 'नेक अमल करनेवालों की मुकम्मल तस्वीर बन जाएँ।'

इसके साथ आपको इस्लाम पर पूरा यक़ीन और इत्मीनान हो। आप गर्व के साथ कह सकें कि "बेशक मैं मुस्लिमों में से हूँ। मेरा सम्बन्ध अल्लाह के फ़रमाँबरदारों से है।"

भाइयो और साथियो! जी चाहता है कि हममें से हर एक की ज़बान पर, हर कोने में, देश के हर हिस्से में और हर तरफ़ से यह आवाज़ बुलन्द हो कि भलाई और नजात दुनिया के जीवन व्यतीत करने के किसी ढंग में नहीं है। भलाई और नजात है तो बस अल्लाह की किताब में और उसके पैग़म्बर हज़रत मुहम्मद *(सल्ल०)* की रहनुमाई में।

अन्त में आपसे गुज़ारिश है कि यहाँ से ख़ाली हाथ न जाएँ। यह पैग़ाम लेकर जाएँ और यही नारा बुलन्द करते रहें—

> "और उस आदमी की बात से अच्छी बात और
> किसकी होगी जिसने अल्लाह की तरफ़ बुलाया।"
> अल्लाह हम सबको हामी और मददगार हो।

❖ ❖ ❖